

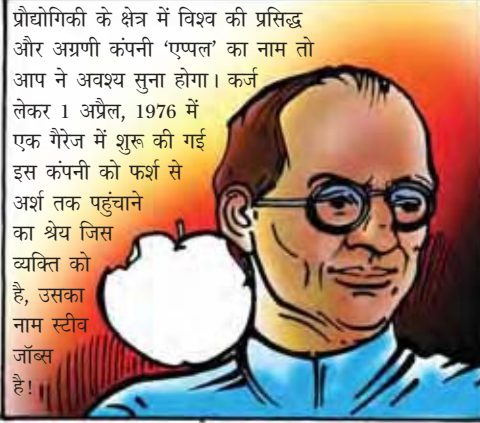
**विज्ञान की शान
ये वैज्ञानिक महान**

स्टीफन पॉल जॉब्स

नीरद (कार्टूनिस्ट) साकेत विहार,
अनीसाबाद पटना-800002 (बिहार)



चित्र/आलेख
नीरद/शैलनीरद



प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विश्व की प्रसिद्ध और अग्रणी कंपनी 'एप्पल' का नाम तो आप ने अवश्य सुना होगा। कर्ज लेकर 1 अप्रैल, 1976 में एक गैरेज में शुरू की गई इस कंपनी को फर्श से अर्श तक पहुंचाने का श्रेय जिस व्यक्ति को है, उसका नाम स्टीव जॉब्स है!

स्टीव जॉब्स का जन्म 24 फरवरी, 1955 को अमरीका के सेनफ्रॉसिस्को शहर में हुआ था। उन्हें जन्म देने वाली मां एक अविवाहित कॉलेज छात्रा थी, पिता अब्दुलफतेह जंदाली एक कैसिनो के मालिक थे, जिनसे स्टीव कभी मिले नहीं।



अविवाहित मां जोआन सिमसन और पिता जंदाली ने पैदा होते ही उन्हें छोड़ दिया। उन्हें एक अनाथालय के हवाले कर दिया। शीघ्र ही उन्हें पाउल और कालरा जॉब्स ने अनाथालय से गोद ले लिया। यद्यपि गोद लेने वाली मम्मी पाउल के पास कॉलेज की कोई डिग्री नहीं थी और पिता तो हाई स्कूल पास भी नहीं थे।



फिर भी गोद लेने के पूर्व उन्होंने वादा किया कि वे स्टीव को कॉलेज तक की शिक्षा जरूर दिलाएंगे। जॉब्स का पूरा नाम स्टीफन पॉल जॉब्स था, पर वह चर्चित व प्रसिद्ध हुए स्टीव जॉब्स के रूप में ही।



स्टीव की स्कूली पढ़ाई कैलिफोर्निया में हुई। स्कूल के बाद वह 'हेवेट-पैकार्ड' कंपनी की ओर से होने वाले लेक्चर में हिस्सा लेने लगे। उन्होंने वहीं पार्ट टाइम नौकरी भी की।



कॉलेज की पढ़ाई के लिए उन्होंने पोर्टलैंड के रीड कॉलेज में प्रवेश लिया। छात्रावास में उन्हें कमरा नहीं मिला। अतः वह दोस्तों के कमरों में फर्श पर सोते।



अपना खर्च जुटाने के लिए कोक की खाली बोतल बेचते। सात मील पैदल चलकर इस्कॉन मंदिर में मुफ्त भोजन करने जाते। पहले सेमेस्टर के बाद ही उन्होंने कॉलेज छोड़ दिया। उन्हें लगा कि इस पढ़ाई से उन्हें कोई फायदा नहीं है।



स्टीव गरीब माता-पिता की सारी कमाई पढ़ाई की फीस में खर्च कर रहे थे। उन्होंने कॉलेज की कैलीग्राफी की कक्षा नहीं छोड़ी। क्योंकि उक्त रीड कॉलेज में कैलीग्राफी की शिक्षा सबसे अच्छी थी। इसका फायदा उन्हें पहला कंप्यूटर बनाने समय मिला। उन दिनों भारत के अध्यात्म की काफी चर्चा थी।



अतएव, कॉलेज छोड़ने के उपरांत वह बतौर हिप्पी भारत चले आए। उनके साथ कॉलेज का मित्र डेनियल कोटके भी था। स्टीव भारत आकर नैनीताल के बाबा नीमकरोली के कैंची आश्रम में रहने लगे। भारत में उन्होंने कल्पना से अधिक गरीबी होने के बावजूद अत्यधिक सादगी और पवित्रता पाई। उन्होंने यहां नौकरी भी की।

लगभग तीन साल तक वह भारत में रहे और तीन वर्ष बाद सादगी और शाकाहार का व्रत लेकर बौद्ध भिक्षु की तरह सिर मुड़ाकर कैलीफोर्निया लौट आए। भारत प्रवास में उन्होंने चिंतन किया कि उन्हें अपनी शक्ति, भाग्य, जीवन और कर्म आदि पर भरोसा करना होगा।



स्टीव जॉब्स ने रीड कॉलेज के अपने दोस्त स्टीव वोजनियक के साथ मिलकर 1 अप्रैल, 1976 को अपने अभिभावक के गैराज में 2.5 लाख डॉलर कर्ज लेकर 'एप्पल' कंपनी की स्थापना की। उस समय स्टीव की उम्र केवल 21 वर्ष थी।



उन्होंने पहला कंप्यूटर 'एप्पल-1' बनाया। कीमत थी 6666.66 डॉलर। 1977 में महज 22 साल की उम्र में पहला पर्सनल कंप्यूटर 'एप्पल-2' बनाया। उस पर रंगीन ग्राफिक्स की सुविधा थी। दिन-रात की मेहनत, अपनी सोच व समर्पण की बदौलत 10 वर्षों के भीतर ही 'एप्पल' को बुलंदियों पर पहुंचा दिया।



इतने अल्प समय में ही 'एप्पल' कंपनी दो बिलियन डॉलर और चार हजार कर्मचारियों की कंपनी बन गई थी। यह सब हासिल किया था, स्टीव ने बिना कंप्यूटर इंजीनियरी की डिग्री के। मगर इतने बड़े कीर्तिमान के बावजूद भाग्य को उनकी और परीक्षा लेनी थी। स्टीव ने एक ऐसे व्यक्ति को नौकरी पर रखा, जो उसकी दृष्टि में कंपनी चलाने के लिए एकदम उपयुक्त था।



पर आगे चलकर उसी व्यक्ति के साथ उनके गहरे मतभेद हो गए। यहां तक कि 'एप्पल' के संस्थापक को ही (यानी स्टीव को) 'बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स' ने 'एप्पल' से निकाल दिया। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी। इसके एक साल पहले ही वह अपनी सबसे खूबसूरत कृति 'मैकिंटोश' बाजार में उतार चुके थे। उनका मानना था कि सफल मार्केटिंग का आधार आम आदमी की जरूरत ही किसी प्रोडक्ट की आकर्षक डिजाइन है।

इस समय स्टीव की उम्र मात्र 30 साल थी। वह पुनः सक्रिय हुए और 'नेक्स्ट' नाम से नई कंपनी शुरू की। एक करोड़ डॉलर में पिक्सर कंपनी खरीदी। 1989 में उनकी मुलाकात लॉरेन पॉवेल से हुई, जिसके साथ 1991 में वैवाहिक परिणय सूत्र में बंध गए।



1991 में ही उन्होंने 'पर्सनल कंप्यूटर' लांच किया फिर 1995 में 'टॉय स्टोरी' नामक एनीमेशन फिल्म बनाई और 35 करोड़ डॉलर कमाए। इसके बाद तो 'ए बग्स लाइफ', 'फाईडिंग निमो', 'मॉन्स्टर्स इंक' जैसी फिल्मों की धूम मच गई। इसी बीच स्टीव की प्रोफेशनल लाइफ में पुनः बदलाव या मोड़ आया।



हुआ यूँ कि 'एप्पल' ने 'नेक्स्ट' को 40.3 करोड़ में खरीद लिया। इससे स्टीव बतौर सलाहकार 'एप्पल' में लौट आए। तब 'एप्पल' घाटे में चल रही थी। प्रतिद्वंद्विता चरम पर थी। मगर शीघ्र ही स्टीव ने अपनी प्रतिभा व कल्पना तकनीक के द्वारा 'एप्पल' को न केवल संकट से उबारा, बल्कि पुनः शीर्ष पर पहुंचा दिया।



सन् 2000 में उन्हें 'एप्पल' का सीईओ बना दिया गया। 2001 में उन्होंने बाजार में 'आईपैड' उतारा। उनके 'मैक ऑपरेटिंग सिस्टम' ने संगीत की दुनिया में धूम मचा दी। मगर भाग्य ने उन्हें एक और झटका दिया। यह झटका व्यावसायिक जीवन में नहीं, बल्कि व्यक्तिगत जीवन में था। 2004 में उन्हें पता चला कि वह अग्न्याशय के कैंसर से पीड़ित हैं। उनका ऑपरेशन हुआ और वह काम पर लौट आए।



उन्होंने अपने जीवन की सच्चाई को जान लिया था। मौत उनके संज्ञान में आ गयी थी। कम समय मानकर स्टीव सारे काम जल्दी-जल्दी निबटाना चाहते थे। पहले 'पोर्टेबल म्यूज़िक प्लेयर; फिर 'आई ट्यून्स', 2006-07 में टच स्क्रीन वाला 'आई फोन' और 2008 में 'आई फोन 3 जी' लांच किया। 2009 में लीवर प्रत्यरोपण के बाद 2010 में आई-पैड बाजार में उतारा। अब उनकी तकलीफ काफी बढ़ गई थी। 24 अगस्त 2011 को स्टीव ने 'एप्पल' से इस्तीफा दे दिया और 5 अक्टूबर, 2011 को जीवन से!



सी.एस.आई.आर. - राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए श्रीमती दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इंटरनेशनल प्रिन्ट-ओ-पैक लिमिटेड, सी-4 से सी-11, होज़री कॉम्प्लेक्स, फेज़-II एक्सटेंशन, नोएडा-201305 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।